# कला और संस्कृति प्रभाग के नारे (स्लोगन्स)

स्वर्णिम संस्कृति का सन्देश । सपनो से प्यारा हो अपना देश ।।

स्वर्णिम विचार से स्वर्णिम संसार । स्वर्णिम संस्कृति से सुख हो अपार।।

कला वही जो भला करे। साथ ले सबको चला करे।।

जहाँ कला का है सम्मान । वहाँ संस्कृति का उत्थांन।।

आध्यात्मिकता से कला का ऐसा करो श्रृंगार ।

१६ कला सम्पूर्ण हो मानव स्वर्ग बने संसार।।

संस्कार परिवर्तन से संसार का होगा परिवर्तन ।।

आत्म परिवर्तन से होगा दैवी संस्कृति का नर्तन ।।

दैवी संस्कृति और कला जीवन में खुशहाली होगी ।।

स्वर्ग बनेगा अपना भारत घर - घर में दीवाली होगी ।।

टी.वी., टी.बी.की बीमारी जकड़ी जिसमें दुनिया सारी।

द्वार नरक का इसने खोला अपसंस्कृति का विष है घोला ।।

दैवी संस्कृति को लाना है। भारत को स्वर्ग बनाना है।।

मातृशक्ति का हो सम्मान । जग का होगा तब कल्याण ।।

भारत की दैवी संस्कृति शुरू करें नव परम्परा।

स्नेह और बन्धुत्व भाव से सुन्दर होगी वसुन्धरा।।

आध्यात्मिक सांस्कृतिक क्रान्ति जग में लायेगी सुख शान्ति ।।

घर-घर अलख जगाना है। स्वर्णिम संस्कृति लाना है।।

राजयोग का करो अभ्यास, विश्व शान्ति होगी पास ।।

दैवी संस्कृति का इतिहास,बदलेगा धरती आकाश ।

हम जागेंगे जग जागेगा । अपसंस्कृति का तम भागेगा ।।

व्यसनों को अब दूर करो। भारत को भरपूर करो ।।

जागो मेरे भारतवासी । तम्बाकू है जीवननाशी ।।

बीड़ी सिगरेट और शराब। संस्कृति को करें खराब ।।

व्यसन मुक्त हो देश हमारा । दैवी संस्कृति अपना नारा ।।

जागे फिर से देश हमारा । व्यसनमुक्त कलाकार हमारा ।।

हम तन के भान में कभी नाआओ । तभी मिटेंगे सभी तनाव ।।

तनके प्रभु के पास न आओ। लाओ किनारे जीवन नाव।।